

प्रश्न → दुई-युद्ध के परिणाम लिखें।

उत्तर → पचास वर्षों के इस दुई-युद्ध ने अमेरिका के प्रत्यक्ष क्षेत्रों को प्रभावित किया विशेष रूप से आर्थिक व वैधानिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में इससे गौ उथल-पुथल हुई, उससे अमेरिका का कोई भी भाग अधुना नहीं रहा।

(1) आर्थिक परिणाम : — दुई-युद्ध के कारण अहाँ उत्तर के उद्योगों को विकास के अवसर प्राप्त हुए वही दक्षिण की छवि लावल्या की क्षति हुई। युद्ध सामग्री के निर्माण के कारण उत्तर के व्यापार-उत्पन्नोत्पन्न धन-सम्पन्न हो गये। मुख्य-धर की तुलना में दक्षिण धर की वृद्धि अत्यंत कम हुई जिससे उद्योग-उत्पन्न हुए और नये-नये कारखानों की स्थापना हुई। श्रमिकों को अनेकानेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, किन्तु हेक्केदारों को इससे अधिक लाभ हुआ। छवि के क्षेत्र में इस-युद्ध के फलस्वरूप कुछ प्रगति हुई। अंधकाल में वहाँ कई नए प्रयोग हुए जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई। पशुपालन से भी आर्थिक वृद्धि हुई, गेहूँ को पालने से अन्न का उत्पादन भी बढ़ गया।

देश में आर्थिक स्थिति में विकास के कारण मुद्रा की मांग बढ़ी। फलतः एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना हुई परन्तु वहाँ के परस्पर-सैद्धांतिक विरोध के कारण वह मंजूर कर दिया गया। 1857 में अपने-अपने बैंकों की स्थापना की की किन्तु उससे लक्ष्य की पूर्ति नहीं हो सकी। 1860 ई. में अमेरिकी बैंकों की संख्या 1500 से भी अधिक हो परन्तु उत्तर के बैंकों के अतिरिक्त सभी की स्थिति डोंगडोला-सी गयी। जोर का प्रचलन भी फिर कर कई बन्धन हुआ था। अतः राष्ट्रीय बैंकों की स्थापना अत्यंत आवश्यक थी। 1863 ई. में जब संघसत्ता और राजकीय प्रभुत्व के मध्य उलझाव समाप्त हो गया तब राष्ट्रीय बैंक अधिनियम पारित हुआ जिसके द्वारा अन्ध बैंकों के लिए न्यूनतम मूल्यन की सीमा निर्धारित कर दी गयी जिसका एक विधेय नाम उत्तरी राष्ट्रीय बैंकों के रूप में प्रदान किया जाता था। इससे बैंकों को दोड़रा लाभ हुआ, परन्तु यह पद्धति अंततः लाभप्रद नहीं हुई, किन्तु फिर भी 1913 ई. तक बैंकों की कार्य-शैली में कोई कम परिवर्तन नहीं किया जा सका।

उत्तर वहाँ के उद्योगों को इस दुई-युद्ध के परिणाम स्वरूप कई लाभ हुए। युद्ध के स्वर्ण को बचत-कर्षण के लिए विदेशी सामग्री पर आभ-कर इतना बढ़ा दिया गया



कि यदि वलें और वेवेस्टर अभी तक जाति होते तो आश्य भी पड़-  
सकते जाते, परन्तु दक्षिण की स्थिति दयनीय हो गयी। युद्ध के  
स्वार्थ पर रेलमार्ग व यातायात बिना-बिना कर दिये गये।  
परिवहन का निरंतर संचालन के कारण समाप्त हो गया। अतः  
निर्माण कार्य अवरुद्ध हो गये व बैंकों का संचालन भी  
असंभव हो गया। बैंकों व वीमा कंपनियों के दिवालिया हो  
जाने के कारण स्थिति और भी खराब हो गयी। संधि  
के पित-विचार द्वारा संधि की सम्पत्ति को जप्त कर लिए  
जाने से स्थिति और खराब हो गयी और राज्य में भूत-पात  
होने लगा।

(2) सामाजिक परिणाम : — दक्षिण एक कृषि  
उपजाऊ देश था। उर्वर भूमि वहाँ की मुख्य सम्पदा थी,  
परन्तु कृषि कार्य के लिए मजदूर उपलब्ध नहीं थे। दास  
व्यवस्था के अन्त के कारण अनेक दास जो कृषि कार्य करते  
थे, अब वह भूत-भोकर खोज में लगे हो गये थे और  
वहाँ के कृषि कार्य पूर्व स्थातियों के गलत कार्य करने को तैयार  
नहीं थे। अतः 1862 ई में इंग्लैंड की संसद में दासों की  
मौत हो गई जिसका मुख्य कारण श्रम की व्यापकता थी। इस  
पर संधि सरकार के जनरल ऑफीसर हार्ड के नेतृत्व में कुछ  
व्यक्तियों की संस्था की स्थापना की और असलमों के लिए  
खाना, कपड़ा व चिकित्सा की व्यवस्था की। श्रमिक दासों की  
समाप्ति कर ली। प्रभावशाली व्यवसायियों पर पड़ोसों  
उनकी दशा सोचनीय हो गयी। दास्यता के अन्त में उनके  
सुख सुविधा को समझ कर दिया। 1668 ई के संविधान के  
14वें संशोधन में 1870 ई में कुछ दासों को मतदान का  
आधिकार देकर उन पर एक अभ्य-प्रहार किया। साथ ही दक्षिण  
के लोगों को स्वकीय सेवा से हटाये जाने पर उनकी और भी  
चुड़सा- हो गयी।

(3) वैचारिक परिणाम : — युद्ध के फलस्वरूप  
संधि का प्रभुत्व अत्यधिक बढ़ गया। यह युद्ध से यह सिद्ध  
हो गया कि जब किसी भी राज्य को संधि से अलग होने  
का अधिकार नहीं है। इससे राष्ट्र की सार्वभौमिकता प्रभावित  
हो गयी। परन्तु इसका यह तात्पर्य कहा नहीं जा सकता कि राज्यों  
को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है।

यह युद्ध के समय 1862 ई में यह अधि-  
नियम व मॉरिल का अधि-प्रधान अधिनियम पारित हुआ।  
जिसके अनुसार हमारा किला भी व्यक्ति को नागरिकता अधि-



160 एकड़ इमि गिरा इलाका के दिये जाने की व्यवस्था और वृक्ष संवर्धन वैज्ञानिक-शिक्षा के लिए राजस्व दिये जाने का प्रावधान किया गया। इसके साथ-साथ इसी वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय रेलगाड़ी अभियान पेरिसिक रेलगाड़ी, सेप्टल-पेरिसिक रेलगाड़ी आदि का भी निर्माण किया गया जिससे संघ सरकार ने पूरी आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

(4) राजनीतिक परिणाम: — गृह-युद्ध के राजनीतिक परिणामों का प्रश्न है कि वह भी पूर्णतः स्पष्ट है। इस युद्ध के बाद संघ की प्रभुता एवं राज्यों की अल्पसंख्यक स्थिति को सभी ने स्वीकार कर लिया। यद्यपि कुछ का मतवक्त यह नहीं हुआ परन्तु उद्योग के क्षेत्र में अल्पसंख्यक मुद्दे हुई। इससे यूरोप की भी प्रसिद्धि और सम्मान में हर्षित हुई और आमतौर पर सारा उनके धर्मों में केंद्रित होने लगे। अतः स्पष्ट है कि गृह-युद्ध के बाद अमेरिका में इतिहास के एक नये युग का प्रीगणेश हुआ।

समाप्त